

धारण (धारणा) Retention) :- धारणा वह तत्व

है जिसके द्वारा अधिगम की हुई वस्तुओं को बनाए रखा जाता है। अधिगम अनुभवों से मस्तिष्क पर कुछ प्रतिकारण बन जाती है जो स्मृति चिह्न (Memory traces) कहलाते हैं। ये प्रतिकारण/चिह्न पहले चेतन मन (conscious) में सुरक्षित तथा धारित की जाती है तथा बाद में अचेतन (Subconscious) मन के माध्यम से अचेतन (unconscious) मन में रहती है। धारणा से पहले सीखी गई वस्तुओं को बनाये रखने में सहायता मिलती है।

बैन्टले के अनुसार - व्यक्ति जो कुछ सीखता या अनुभव करता है, उससे मस्तिष्क

में चिह्न बन जाते हैं। ये चिह्न स्मृति चिह्न (Memory traces) कहलाते हैं। क्रियात्मक प्रवृत्ति के (Functional tendency) रूप में ये ही स्मृति चिह्न धारण (Retention) के आधार हैं। इनके सिवा जाने पर धारण भी समाप्त हो जाता है।

धारण के चेतन (conscious); अचेतन (Subconscious) तथा अचेतन (Unconscious) अनेक स्तर होते हैं। चेतन स्तर की बातों को याद करने के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता, अचेतन स्तर की बातें प्रयास से याद आती हैं। अचेतन स्तर की बातें प्रयास करने पर भी याद नहीं आती और उनके शब्द साहचर्य (Word association), स्वप्न विश्लेषण आदि विभिन्न उपायों से जानने का या याद करने का प्रयास किया जाता है।

धारणा को प्रभावित करने वाले कारक (Factors influencing retention)

- (1) वस्तु की प्रकृति (Nature of material)
- (2) अधिगम की विधियाँ (Methods of learning)

- (3) अधिगम की गति (Rate of learning)
- (4) मानसिक स्थिति (mental set condition)
- (5) चिंतन तथा तर्क (Thinking and Reasoning)
- (6) प्रतीकों की वर्तमानता तथा बारंबारता (Recency and Frequency of impression)
- (7) व्यक्तिगत विभिन्नताएँ (Individual differences)
- (8) शिक्षार्थी की आयु (Age of learner)
- (9) अभिरुचि एवं अभिलक्ष्यता (Interest and Aptitude)
- (10) सांवेगिक स्थिति (Emotional tone)

प्राण की जाँच की विधियाँ  
(Methods of testing Retention)

- (1) पुनःस्मरण विधि (Recall method)
- (2) प्रत्यभिज्ञान / अभिज्ञान / पहचान विधि (Recognition method)
- (3) पुनःसीखना विधि (Relearning method)
- (4) पुनर्निर्माण विधि (Reconstruction method)

(1) पुनःस्मरण विधि (Recall Method) → पुनःस्मरण / प्रत्याकलन विधि जिसे

पुनरुत्पादन विधि (reproduction method) भी कहा जाता है। यह यह प्राण की जाँच की सबसे लोकप्रिय विधि है। इस विधि में प्राण की जाँच पुनःस्मरण (Recall) करके की जाती है। पूर्व सीखे गए विषय या पाठ को व्यक्ति अपने सामने से हटा देता है तथा उसकी अनुपस्थिति में ही उसे बोलकर या लिखकर उसका पुनःस्मरण करता है। पुनःस्मरण की मात्रा जितनी ही अधिक होती है, प्राण उतनी ही शुद्ध एवं मजबूत मानी जाती है।

(2) पहचान या अभिज्ञान विधि (Recognition method) → इस विधि

का आधार पहचान (Recognition) है। पहचान या अभिज्ञान में सीखे गए पाठ या विषय को कुछ सदृश (Similarity) एवं नए उद्दीपन के साथ मिलाकर शिक्षार्थी के सामने उपस्थित किया जाता है। यदि सचमुच में शिक्षार्थी पूर्व सीखे गए पाठ विषय को चारों ओर से पहचान लेता है, तो वह आसानी से इस पाठ या विषय को नए पाठ या विषय से अलग कर पहचान लेता है। परन्तु, यदि वह पूर्व सीखे गए विषय या पाठ को नए एवं सदृश पाठ से अलग कर पहचान करने में असमर्थ रहता है, तो ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति की धारणा (Attention) कमजोर थी। इस तरह हम देखते हैं कि पुनः स्मरण विधि में ब्रह्म पाठ या विषय को उसकी अनुपस्थिति में ही व्यक्ति उसे बोलकर या लिखकर recall करता है। जबकि पहचान विधि में ब्रह्म पाठ या विषय को उससे मिलते जुलते पाठ या विषय को उसकी साथ मिलाकर व्यक्ति के सामने उपस्थित किया जाता है और व्यक्ति को पूर्व सीखे गए विषय की पहचान करनी होती है। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने पहचान विधि को पुनः स्मरण विधि से काफी अधिक सरल माना है।

(3) पुनः सीखना - विधि (Relearning method) → इस विधि का प्रियादर

इबिंगहाउस (Ebbinghaus) ने किया था तथा इसे लक्ष्य विधि (Savings method) भी कहा जाता है। इस विधि में पाठ या एकांश (Items) को शिक्षार्थी एक निश्चित कसौती (Fixed criterion) तक सीख लेता है। उसके कुछ दिन या कुछ घंटे बीतने के बाद शिक्षार्थी उसी पाठ को उसी कसौती तक पुनः सीखता (relearn) है। धारणा (Retention) की जाँच शिक्षार्थी द्वारा पुनः सीखने में लगे प्रयास (Trials) या समय (Time) या त्रुटि (Errors) के आधार पर की जाती है। जब शिक्षार्थी सीखे गए

पाठ को या विषय को धारणा किए रहता है, वही वही परिस्थिति में वह कम प्रतिक्रिया (Reaction) करते हुए एवं कम समय में ही दोबारा कम प्रयासों में ही सीख लेता है। इस तरह विषय की धारणा मजबूत होने पर उसे समय तथा प्रयास (Trial) की बचत (Saving) होती है और साथ ही साथ उसे गंभीर (Serious) भी कम होती है।

(म) पुनर्निर्माण विधि (Reconstruction Method) → यह विधि-

पुनः सीखना विधि से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। इस विधि में पूर्व सीखे गए पाठ या विषय-को कुछ समय अंतराल (Time interval) के बाद व्यक्ति को सामने एक यादृच्छिक क्रम (Random order) में उलट-पुलट कर प्रस्तुत किया जाता है। व्यक्ति को इन इकाइयों (Items) को फिर उसी क्रम में (Order or Sequence) में पुनर्निर्माण या पुनर्व्यवस्था (Reconstruct or Rearrange) करने को कहा जाता है जिस क्रम में उसने इन इकाइयों को सीखा था। इस विधि में धारणा की जाँच पूर्वक्रम में पुनर्व्यवस्था किए गए इकाइयों की संख्या से की जाती है। यह संख्या जितनी अधिक होती है, धारणा उतनी ही मजबूत समझी जाती है।

इस प्रकार मनोवैज्ञानिकों ने धारणा की जाँच के लिए कई विधियों का प्रयोग किया है। लेकिन सबसे लोकप्रिय विधि प्रत्याह्वन / पुनःस्मरण विधि (Recall Method) है।